SHRI K. K. RAGESH (Kerala): Sir, I also associate myself with the matter raised by the hon. Member.

SHRI T.K.S. ELANGOVAN (Tamil Nadu): Sir, I also associate myself with the matter raised by the hon. Member.

SHRI RITABRATA BANERJEE (West Bengal): Sir, I also associate myself with the matter raised by the hon. Member.

SHRI RIPUN BORA (Assam): Sir, I also associate myself with the matter raised by the hon. Member.

Need for keeping river Ganga clean under 'Namami Gange' Project

सुश्री सरोज पाण्डेय (छत्तीसगढ़): सभापति महोदय, मैं आपके माध्यम से सरकार का ध्यान आकर्षित करना चाहती हूँ कि देश में 'नमामि गंगे एकीकृत मिशन' की शुरुआत हुई। गंगा हम सभी के लिए भारत की संस्कृति का प्रतीक है। भारत की संस्कृति बहुत समृद्धशाली रही है। अब्दुल जब्बार जी की कविता है,

"उमंगें भर दे जीवन में, उजाले कर दे जीवन में,
यह निर्मल नीर गंगा का।
लगा ले नयनों से कोई, तो ज्योति उसकी बढ़ जाए,
लगा ले भाल से कोई, मुकद्दर उसका बन जाए।

यह देश की गंगा की संस्कृति रही है। हम एक तरह से इस संस्कृति के पोषक रहे हैं। मैं भारत के प्रधान मंत्री माननीय नरेन्द्र मोदी जी को इस बात के लिए साधुवाद देती हूँ कि उन्होंने 2014 में 'नमामि गंगे' की शुरुआत की। सावन का यह पवित्र महीना चल रहा है। माननीय सभापति महोदय, मैं आपके माध्यम से कहना चाहती हूँ कि सरकार ने 926 करोड़ रुपए से ज्यादा लागत से नमामि गंगे मिशन की शुरुआत की और उन्होंने इस मिशन को आगे बढ़ाया। बहुत जगहों पर गंगा स्वच्छ हुई है, लेकिन इसके लिए जनजागरण की आवश्यकता भी है, इसके साथ-साथ गंगा को अविरल रूप में संरक्षित करने की आवश्यकता भी है। महोदय, मैं आपके मध्यम से सरकार से यही मांग करती हूं कि अविरल रूप में गंगा को संरक्षित करने के साथ-साथ, उसे स्वच्छ रखने के लिए सरकार एक जन-जागरण अभियान की शुरुआत भी करे, धन्यवाद।

डा. अशोक बाजपेयी (उत्तर प्रदेश): सर, मैं माननीय सदस्य द्वारा उठाए गए विषय से स्वयं को सम्बद्ध करता हूं।

Shortage of hearse vans in hospitals

श्री जावेद अली खान (उत्तर प्रदेश): माननीय सभापति जी, मैं अत्यंत कष्टकारी, हृदय विदारक और अमानवीय घटनाओं की तरफ सदन का, सरकार का और पूरे समाज का ध्यान आकर्षित करना चाहता हूं। हम सब जानते हैं कि हमारे देश में स्वास्थ्य सेवाओं में निरंतर सुधार हो रहा

है और विस्तार भी हो रहा है, लेकिन हम आज तक अस्पताल में मृत होने वाले शवों के निस्तारण के संबंध में कोई ठोस योजना नही बना पाए हैं। आए दिन देश के विभिन्न भागों से ऐसी खबरें आती हैं कि गरीब लोग, जो किसी तरीके से अस्पताल में इलाज के लिए पहुंच जाते हैं या उनके परिजन उन्हें पहुंचा देते हैं, लेकिन वहां अगर उनकी मृत्यु हो जाती है, तो कोई शव को अपने कंधे पर डाल कर, दस-दस किलो मीटर तक पैदल ले जाता है, कोई साइकिल के कैरियर पर, एक मृत पशु की तरह लाद कर ले जाता है और कोई मोटर साइकिल में बांध कर ले जाता है। एक स्थिति तो ऐसी आई, जिसने हम सबकी संवेदनाओं को झकझोर कर रख दिया। मैं समझता हूं कि ऐसी घटनाओं के प्रति हम सभी को संवेदनशील होना ही चाहिए। ओडिशा में एक व्यक्ति अपने रिश्तेदार के मृत शव को तोड़-मरोड़ कर, हड्डियां तोड़ कर, एक गठरी बांध कर, अपने सिर पर रख कर लेकर गया।

पिछले दिनों ओडिशा के कालाहांडी जिले से यह सूचना आई थी, जिसकी तस्वीरें और वीडियोज़ हम सबने देखे थे। उस समय बहरीन के बादशाह, **Shaikh Hamad Isa Al Khalifa** ने उस मृतक के परिजनों को 9 लाख रुपये की मदद भेजी। हम सब जानते हैं कि विदेशी मदद के नियम हैं, **FERA** हैं, एफसीआरए है और जाने क्या-क्या है, इसलिए मुझे नही पता कि वह मदद उस तक पहुंची या नही पहुंची। उसकी इस स्थिति को देख कर और सुन कर मैं बहुत शर्मसार हुआ और मैं मानता हूं कि मेरे देश के सभी लोगों को इस स्थिति पर शर्मसार होना चाहिए कि एक विदेशी बादशाह और विदेश के नेता मृत लोगों के शवों को ले जाने वालों की मदद कर रहे हैं।

महोदय, मैं इस अवसर पर ओडिशा के मुख्य मंत्री, माननीय नवीन पटनायक जी को धन्यवाद देना चाहता हूं और उनकी प्रशंसा करना चाहता हूं, जिन्होंने मृत शवों को घर तक पहुंचाने का जिम्मा अपनी सरकार के ऊपर लिया है। उन्होंने इसके लिए 'महाप्रयाण योजना' के नाम से एक योजना शुरू की है। मेरा सुझाव है कि किसी प्राइवेट अस्पताल को लाइसेंस देते वक्त, यह सुनिश्चित होना चाहिए कि उस अस्पताल के अंदर कम-से-कम एक या दो वाहन ऐसे हों, जो मृत शवों को एक निश्चित दूरी तक पहुंचाने का काम करें या रेलवे स्टेशन तक पहुंचा कर आएं। सरकार को सरकारी अस्पतालों में यह काम बिल्कुल मुकम्मल तरीके से करना चाहिए।

†**جناب جاوید علی خان (اترپردیش):** مانئیے سبھاپتی جی، میں انیت کشٹ کاری ہردے ودارک اور امانوئیے گھٹناؤں کی طرف سدن کا، سرکار کا اور پورے سماج کا دھیان آکرشت کرنا چاہتا ہوں۔ ہم سب جانتے ہیں کہ ہمارے دیش میں سواستھ سیواؤں میں نرنتر سدھار ہورہا ہے اور وستار بھی ہورہا ہے، لیکن ہم آج تک اسپتال میں مردہ لاشوں کے نستارن کے سمبندھ میں کوئی ٹھوس یوجنا نہیں بنا پائے ہیں۔ آئے دن دیش کے مختلف حصوں سے ایسی خبریں آتی ہیں کہ غریب لوگ، جو کسی طریقے سے اسپتال میں علاج کے لئے پہنچ جاتے ہیں یا ان کے پریجن انہیں پہنچادیتے ہیں، لیکن وہاں اگر ان کی موت ہوجاتی ہے، تو کوئی لاش کو اپنے کندھے پر ڈال کر، دس دس کلومیٹر تک پیدل لے جاتا ہے، کوئی سائیکل کے کیریئر پر، ایک مردہ جانور کی طرح لاد کر لے جاتا ہے اور کوئی موٹر سائیکل میں باندھ کر لے جاتا ہے۔

†Transliteration in Urdu Script.

ایک استھتی تو ایسی آئی، جس نے ہم سب کی سموینناؤں کو جھنجھوڑ کر رکھ دیا۔ میں سمجھتا ہوں کہ ایسی گھٹناؤں کے پرتی ہم سبھی کو سموینشیل ہونا ہی چاہیے۔ اڈیشہ میں ایک شخص اپنے رشتہ دار کی مردہ لاش کو توڑ مروڑ کر، ہڈیاں توڑ کر، ایک گٹھری باندھ کر، اپنے سر پر رکھ کر لے کر گیا۔

پچھلے دنوں اڈیشہ کے کالا ہانڈی ضلع سے یہ خبر آئی تھی، جس کی تصویریں اور ویڈیوز ہم سب نے دیکھے تھے۔ اس وقت بحرین کے بادشاہ شیخ حمد بن
†عیسیٰ الخلیفہ نے اس مردے کے گھر والوں کو نو لاکھ روپے کی مدد بھیجی۔ ہم سب جانتے ہیں کہ ودیشی مدد کے قانون ہیں، پھیرے ہیں، ایف۔سی۔آر۔اے۔ ہے اور جانے کیا کیا ہے، اس لئے مجھے نہیں پتہ کہ وہ مدد اس تک پہنچی یا نہیں پہنچی، اس کی اس حالت کو دیکھ کر اور سن کر میں بہت شرمسار ہوا اور میں مانتا ہوں کہ میرے دیش کے سبھی لوگوں کو اس حالت پر شرمسار ہونا چاہئے کہ ایک ودیشی بادشاہ اور ودیش کے نیتا مردہ لوگوں کی لاشوں کو لے جانے والوں کی مدد کر رہے ہیں۔

مہودے، میں اس موقع پر اوڈیشہ کے مکھیہ منتری، مانئے نوین پٹنائک جی کو دھنیواد دینا چاہتا ہوں اور ان کی پرشنسا کرنا چاہتا ہوں، جنہوں نے مردہ لاشوں کو گھر تک پہنچانے کا ذمہ اپنی سرکار کے اوپر لیا ہے۔ انہوں نے اس کے لئے 'مہا پریان یوجنا" کے نام سے ایک یوجنا شروع کی ہے۔ میرا سجھاؤ ہے کہ کسی پرائیویٹ اسپتال کو لائسنس دیتے وقت، یہ یقینی ہونا چاہئے کہ اس اسپتال کے اندر کم سے کم ایک یا دو واہن ایسے ہوں، جو مردہ لاشوں کو ایک نشچت دوری تک پہنچانے کا کام کریں یا ریلوے اسٹیشن تک پہنچا کر آئے۔ سرکار کو سرکاری اسپتالوں میں یہ کام بالکل مکمل طریقے سے کرنا چاہئے۔

(ختم شد)

श्री सभापति: धन्यवाद, आपने अच्छा मैटर उठाया है।

प्रो. राम गोपाल यादव (उत्तर प्रदेश): सर, मैं माननीय सदस्य द्वारा उठाए गए विषय से स्वयं को सम्बद्ध करता हूं।

श्री सुखेन्दु शेखर राय (पश्चिम बंगाल): सर, मैं भी माननीय सदस्य द्वारा उठाए गए विषय से स्वयं को सम्बद्ध करता हूं।

श्रीमती विप्लव ठाकुर (हिमाचल प्रदेश): सर, मैं भी माननीय सदस्य द्वारा उठाए गए विषय से स्वयं को सम्बद्ध करती हूं।

श्रीमती झरना दास बैद्य (त्रिपुरा): सर, मैं भी माननीय सदस्य द्वारा उठाए गए विषय से स्वयं को सम्बद्ध करती हूं।

श्रीमती सरोजिनी हेम्ब्रम (ओडिशा): सर, मैं भी माननीय सदस्य द्वारा उठाए गए विषय से स्वयं को सम्बद्ध करती हूं।

श्रीमती जया बच्चन (उत्तर प्रदेश): सर, मैं भी माननीय सदस्य द्वारा उठाए गए विषय से स्वयं को सम्बद्ध करती हूं।

श्री बी. के. हरिप्रसाद (कर्नाटक): सर, मैं भी माननीय सदस्य द्वारा उठाए गए विषय से स्वयं को सम्बद्ध करता हूं।

श्री प्रताप सिंह बाजवा (पंजाब): सर, मैं भी माननीय सदस्य द्वारा उठाए गए विषय से स्वयं को सम्बद्ध करता हूं।

SHRI K. C. RAMAMURTHY (Karnataka): Sir, I also associate with the issue raised by the hon. Member.

श्री मोहम्मद अली खान (आंध्र प्रदेश): सर, मैं भी माननीय सदस्य द्वारा उठाए गए विषय से स्वयं को सम्बद्ध करता हूं।

†**جناب محمد علی خان (آندھراپردیش):** سر، میں بھی معزز سدسیہ کے ذریعہ اٹھائے گئے موضوع سے خود کو سمبدّ کرتا ہوں۔

श्री पी. एल. पुनिया (उत्तर प्रदेश): सर, मैं भी माननीय सदस्य द्वारा उठाए गए विषय से स्वयं को सम्बद्ध करता हूं।

श्री संजय सिंह (राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र दिल्ली): सर, मैं भी माननीय सदस्य द्वारा उठाए गए विषय से स्वयं को सम्बद्ध करता हूं।

SHRI K.K. RAGESH (Kerala): Sir, I also associate myself with the issue raised by the hon. Member.

प्रो. मनोज कुमार झा (बिहार): सर, मैं भी माननीय सदस्य द्वारा उठाए गए विषय से स्वयं को सम्बद्ध करता हूं।

SHRI AMAR PATNAIK (Odisha): Sir, I also associate myself with the issue raised by the hon. Member.

श्री प्रशांत नन्दा (ओडिशा): सर, मैं भी माननीय सदस्य द्वारा उठाए गए विषय से स्वयं को सम्बद्ध करता हूं।

†Transliteration in Urdu Script.

SHRI RITABRATA BANERJEE (West Bengal): Sir, I also associate myself with the issue raised by the hon. Member.

SHRI BHASKAR RAO NEKKANTI (Odisha): Sir, I also associate myself with the issue raised by the hon. Member.

श्री हरनाथ सिंह यादव (उत्तर प्रदेश): सर, मैं भी माननीय सदस्य द्वारा उठाए गए विषय से स्वयं को सम्बद्ध करता हूं।

SHRI SASMIT PATRA (Odisha): Sir, I also associate myself with the issue raised by the hon. Member.

SHRI BINOY VISWAM (Kerala): Sir, I also associate myself with the issue raised by the hon. Member.

Problems being faced by sportspersons in rural areas across the country

श्री विजय पाल सिंह तोमर (उत्तर प्रदेश): माननीय सभापति महोदय, देश के ग्रामीण क्षेत्रों में खेल प्रतिभाओं में आगे बढ़ने की बहुत अधिक संभावनाएं हैं, लेकिन हम देखते हैं कि संसाधनों के अभाव में, किसान परिवारों और गांवों से आने वाले लड़के-लड़कियां वही तक सिमट कर रह जाते हैं। वे आगे नही बढ़ पाते हैं।

गत् वर्ष, मेरठ जिले के पास ही एक कलीना गांव है, जहां के बहुत छोटे-से किसान परिवार का लड़का, सौरभ चौधरी, एशियाड खेलों में गोल्ड मैडल जीत कर लाया और देश का गौरव बढ़ाने का काम किया। मैं मेरठ के सरधना विधान सभा क्षेत्र से एमएलए रहा हूं, वही नज़दीक में एक सिवाया गांव है, जहां का एक लड़का, सारदुल विहान एशियाड खलों में रजत पदक जीत कर आया है और उसने देश का नाम रोशन करने का काम किया है।

मान्यवर, दुर्भाग्य की बात यह है कि वहां पर शॉर्टगन शूटिंग रेंज के लिए साजो-सामान और उचित मशीनें नही हैं और न ही उनके पास दिल्ली आने-जाने के लिए कोई उचित साधन है। वहां की लड़कियां भी बहुत प्रतिभाशाली हैं। मेरे गांव के पास ही एक सिसौली गांव है, जहां से अलका तोमर, कॉमनवैल्थ गेम्स में गोल्ड मैडल जीत कर लाई थी। अभी भी वहां कई और लड़कियां नेशनल लैवल पर खेल रही हैं, लेकिन ग्रामीण क्षेत्र की इन लड़कियों के लिए न तो कोई अलग अखाड़ा है और न ही अभ्यास करने के लिए साधन हैं। शूटिंग वाले लड़के, जो स्वर्ण पदक और रजत पदक जीतकर आए हैं, उनके पास भी शॉर्टगन शूटिंग के लिए कोई साधन-सुविधा उपलब्ध नही हैं। मान्यवर, मैं आपके माध्यम से सरकार से आग्रह करूँगा कि वह मेरठ में शॉर्ट गन शूटिंग रेंज की सभी सुविधाएँ उपलब्ध कराये तथा लड़कियों के लिए अलग से कुश्तियों के अभ्यास के लिए अखाड़ा बनाने की व्यवस्था करे।

SHRI VAIKO (Tamil Nadu): Sir, I associate myself with the issue raised by Shri Vijay Pal Singh Tomar.